5601

M.A. (Final) Examination, 2017

RAJASTHANI

Paper–I

(प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य)

Time : Three Hours
Maximum Marks : 100

PART - A (खण्ड-अ) [Marks : 20

Answer all questions (50 words each).
All questions carry equal marks.
सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 50 शब्दों से अधिक न हो।
सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART - B (खण्ड-ब) [Marks : 50

Answer *five* questions (250 words each).
Selecting *one* from each unit. All questions carry equal marks.
प्रत्येक इकाई से **एक**-एक प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्न कीजिए।
प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो।
सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART - C (खण्ड-स) [Marks : 30

Answer any *two* questions (300 words each).
All questions carry equal marks.
कोई **दो** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो।
सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-अ

इकाई-I

1. (अ) ''ढोला मारू रा दूहा'' के सम्पादक त्रय के नाम लिखिए।

(ब) ''बाबहियउ नइ विरहणी, दुहुवाँ एक सहाव।

जब ही बरसई घण घणउ, तबही कहइ प्रियाव।।''

यह पद्य किस ग्रन्थ से और इस पद्य में शृंगार का कौनसा वर्णन है?

इकाई-II

(स) ''रणमल छंद'' में कुल कितने छंद हैं एवं रचनाकार ने किसके युद्ध का वर्णन किया है?

(द) ''रणमल छंद'' की भाषा शैली कौनसी है?

इकाई-III

(य) 'किसन-रुकमणी री वेलि' ग्रन्थ में कृष्ण का पुत्र किसे बताया गया है?

(र) रूक्मिणी के पाँचों भाईयों के नाम बताइये।

इकाई-IV

(ल) शिशुपाल के पिता कौन हैं?

(व) 'सिलोका' का आशय स्पष्ट कीजिए।

इकाई-V

(श) 'रास' का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ष) 'रासो' में किस प्रकार की रचना होती है?

खण्ड-ब

इकाई-I

2. 'ढोला मारू रा दूहा' काव्य में मालवणी के वियोग को उदाहरण सहित प्रस्तुत कीजिए।

3. 'ढोला मारू रा दूहा' काव्य के अन्तर्गत राजस्थान प्रदेश की विशेषताओं के उदाहरण देकर समझाइए।

इकाई-II

4. 'वेलि क्रिसन रुक्मिणी री' काव्य

5601/170

5. 'वेलि किसन रुक्मिणी री' काव्य के ऋतु वर्णन पर प्रकाश डालिए।

इकाई-III

6. 'रणमल्ल छन्द काव्य' के भाव पक्ष को उजागर कीजिए।

7. 'रणमल्ल छन्द' काव्य के कुपात्र का चरित्र चित्रण प्रस्तुत कीजिए। काव्य में प्रयुक्त अलंकारों पर प्रकाश डालिए।

इकाई-IV

8. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

जिणि सेस सहस फण, फणि-फणि बि-बि जिह,

जीह-जीह नव़-नव़उ जस

तिणि-ही पार न पायउ त्रीकम!

वयण डेडराँ किसउ वस?

चोटियाळी कूदइ चउसठि चाचरि,

धू ठळियइ, ऊकसइ धड़

अनँत अनइ सिसुपाळ अउझड़इ

झड़ मातउ माँकियउ झड़।

9. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

बाबहियउ नइ विरहवी, दुहुवाँ एक सहाव।

जब ही बरसइ घण घणउ, तबही कहइ प्रियाव।।

जळ थळ, थळ जळ, हुइ रसउ, बोलइ मोर किंगार।

स्रावण इथर हे सखी, किहाँ मुझ प्राण-अधार।।

सज्जण चाल्या हे सखी, नयणे कीयो सोग।

सिर साड़ी, गळि कंचुवउ, हुवउ निचोवण जोग।।

इकाई-V

10. राजस्थानी साहित्य की वेली परम्परा पर प्रकाश डालिए।

11. प्राचीन काव्य रूप नीसांणी पर प्रकाश डालिए।

खण्ड-स

इकाई-I

12. 'ढोला-मारू रा दूहा' के भाव पक्ष को उदाहरण देकर विस्तार से समझाइये।

इकाई-II

13. 'वेलि क्रिसन रुक्मिणी री' के कला पक्ष को उदाहरण सहित प्रस्तुत कीजिए।

इकाई-III

14. राजस्थानी वीर काव्य परम्परा में 'रणमल्ल छन्द' काव्य का स्थान निर्धारित कीजिए।

इकाई-IV

15. 'ढोला-मारू रा दूहा' काव्य लौकिक प्रेमाख्यान का काव्य है। उदाहरण देकर वाक्य की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

इकाई-V

16. राजस्थानी जन काव्य पवाड़ा पर आलेख प्रस्तुत कीजिए।